In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हिन्दी १२८

१८

समाज विकासमाला

ा-प्रवेशिका

हित्य मण्डल प्रकाशन

हिन्दी
१८

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला : २५

गीता-प्रवेशिका

गीता पर गांधीजी के विचार और
उनके द्वारा चुने हुए सरल श्लोक

संग्राहक
सव्यसाची

९३९८
हि·१२८

संपादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६०
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९६०
मूल्य
सैंतीस नये पैसे
३०

मुद्रक
इण्डिया प्रिंटर्स
दिल्ली

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा। बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

इस पुस्तक-माला को हमने इन्हीं बातों को सामने रखकर चालू किया है। इसमें से कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में पाठकों को सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनन्द होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायेंगे।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

पाठकों से

हमारे धर्म-ग्रन्थों में गीता का ऊंचा स्थान है। गांधीजी ने उसे माता के रूप में माना है और बताया है कि उसकी गोद में जाने से हमारी सारी चिंताएं दूर हो जाती हैं, निराशा हमारे पास भी नहीं फटकने पाती।

गीता के बारे में गांधीजी ने बहुत लिखा है। फुटकर लेखों के अलावा गीता के सारे श्लोकों का अर्थ उन्होंने 'अनासक्ति-योग' में, हरेक अध्याय का सार 'गीताबोध' में, कठिन शब्दों का अर्थ 'गीता-पदार्थकोश' में और जो सारी गीता न पढ़ सकें उनके लाभ के लिए चुने हुए श्लोकों का संग्रह 'गीता-प्रवेशिका' में दिया है।

उनके लेखों में से चुनकर कुछ सामग्री इस किताब में दी गई है। 'गीता-प्रवेशिका' के श्लोक भी अर्थ के साथ दिये हैं। इन श्लोकों में गीता का सार आ जाता है।

आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ें और इसका मनन करें। आपको बड़ा लाभ होगा।

—सम्पादक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गीता-प्रवेशिका

: १ :

गीता-माता

गीता शास्त्रों का निचोड़ है। मैंने कहीं पढ़ा था कि सारे उपनिषदों का सार उसके ७०० श्लोकों में आता है। इसलिए मैंने निश्चय किया कि कुछ न हो सके तो गीता का ज्ञान प्राप्त कर लूं। आज गीता मेरे लिए केवल बाइबिल नहीं है, केवल कुरान नहीं है, मेरे लिए वह माता हो गई है। मुझे जन्म देनेवाली माता तो चली गई, पर संकट के समय गीता-माता के पास जाना मैं सीख गया हूं। मैंने देखा है कि जो कोई इस माता की शरण जाता है, उसे वह ज्ञान के अमृत से छका देती है। जो मनुष्य गीता में से अपने लिए आश्वासन पाना चाहता है, उसे वह पूरा-पूरा मिल जाता है। जो गीता का भक्त है, उसके लिए निराशा की कोई जगह नहीं। वह हमेशा आनन्द में रहता है।...

कामधेनु

गीता कामधेनु की भांति है, जो सारी इच्छाओं को पूरा करती है। इसीलिए वह माता कहलाती है। अपने आध्यात्मिक जीवन को कायम रखने के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हमें जितने दूध की जरूरत है, उसके लिए अगर हम दुधमुंहे बच्चे की तरह मांग करें तो वह अमर माता हमें पूरा दूध दे देती है, वह अपने लाखों बच्चों को कभी न सूखनेवाले थनों से दूध दे सकती है।...

मेरे लिए तो गीता जिन्दा मां है, कामधेनु है। गीता का रोज पढ़ना नीरस लगता है, क्योंकि उसका मनन नहीं होता। हमें रोज रास्ता दिखानेवाली माता है, ऐसा समझकर पढ़ें तो नीरस नहीं लगेगी। हर रोज के पाठ के बाद एक मिनट के लिए उसपर विचार कर लें। रोज ही कुछ-न-कुछ नया मिलेगा। हां, सम्पूर्ण पुरुष को उसमें से कुछ नहीं मिलेगा, लेकिन जिससे रोज कोई दोष हो जाते हों उसे उबारनेवाली गीता-माता है, यह समझकर रोज पाठ करने से थके नहीं।

गीता के सतत अभ्यास से चिंताओं से दूर रहना सीखना है। हम सबकी फिक्र रखनेवाला ईश्वर बैठा है। तब यह बोझा बेकार हम क्यों ढोते फिरें? हमें तो अपने हिस्से आया काम करते रहना है।...

गीता से परिचय

१८८९ के साल में गीताजी से मेरा पहला परिचय हुआ। उस समय मेरी उम्र बीस साल की थी।...

विलायत में रहते हुए मुझे कोई एक साल हुआ होगा, इस बीच दो मित्रों से मुलाकात हुई। उन्होंने मुझसे गीता की बात चलाई। अपने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

साथ संस्कृत में गीता पढ़ने के लिए कहा। मैं लज्जित हुआ, क्योंकि मैंने तो गीता न संस्कृत में, न भाषा में ही पढ़ी थी।...उन दोनों भाइयों के साथ मेरा गीता पढ़ना शुरू हुआ। दूसरे अध्याय के आखिरी श्लोकों का मेरे दिल पर गहरा असर हुआ। बस कानों में उनकी आवाज दिन-रात गूंजा करती थी। तब मुझे पता चला कि गीता—भगवद्गीता—तो अमूल्य ग्रंथ है। यह धारणा दिन-दिन अधिक मजबूत होती गई और अब तो तत्वज्ञान के लिए उसे सबसे अच्छा ग्रंथ मानता हूं। निराशा के समय इस ग्रंथ ने मेरी अमूल्य सहायता की है।

गीता-पाठ का असर

गीता-पाठ का असर मेरे संगी-साथियों पर जो कुछ पड़ा हो, वह वही बता सकते हैं, किन्तु मेरे लिए तो गीता आचार की एक प्रौढ़ मार्ग-दर्शिका बन गई है। वह मेरा धार्मिक कोष हो गई है। अपरिचित अंग्रेजी शब्द के हिज्जे या अर्थ को देखने के लिए जिस तरह मैं अंग्रेजी कोश को खोलता, उसी तरह आचार-सम्बन्धी कठिनाइयों और उसकी अटपटी गुत्थियों को गीताजी के द्वारा सुलझाता। उसके अपरिग्रह, समभाव आदि शब्दों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। यही धुन रहने लगी कि समभाव कैसे प्राप्त करूं, कैसे उसका पालन करूं? जो अधिकारी हमारा अपमान करे, जो रिश्वतखोर हैं, रास्ते चलते जो विरोध करते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हैं, जो कल के साथी हैं, उनमें और उन सज्जनों में जिन्होंने हमपर भारी उपकार किया है, क्या कुछ भेद है ? अपरिग्रह का पालन किस तरह मुमकिन है ? क्या यह हमारी देह ही हमारे लिए कम परिग्रह है ? स्त्री-पुरुष आदि अगर परिग्रह नहीं तो फिर क्या हैं ? क्या पुस्तकों से भरी इन अलमारियों में आग लगा दूं ? पर यह तो घर जलाकर तीर्थ करना हुआ। अंदर से तुरंत उत्तर मिला,—हां, घरबार को खाक किये बिना तीर्थ नहीं किया जा सकता। गीताजी के पठन-पाठन की बदौलत ट्रस्टी शब्द का अर्थ अच्छी तरह से समझ में आया। कानून-शास्त्र के लिए मन में आदर बढ़ा। उसके अन्दर भी मुझे धर्म का तत्व दिखाई पड़ा। ट्रस्टी यों करोड़ों की सम्पत्ति रखते हैं, फिर भी उसकी एक पाई पर उनका अधिकार नहीं होता। इसी तरह का आचरण घरबारवालों को भी करना चाहिए, यह पाठ मैंने गीताजी से सीखा। अपरिग्रही होने के लिए, समभाव रखने के लिए, हेतु का और हृदय का परिवर्तन जरूरी है, यह बात मुझे दीपक की तरह साफ दिखाई देने लगी। बस, तुरन्त रेवाशंकरभाई को लिखा कि बीमे की पालिसी बन्द कर दीजिये। कुछ रुपया वापस मिल जाय तो ठीक, नहीं खैर। बाल-बच्चों और घरवाली की रक्षा वह ईश्वर करेगा, जिसने उसको और हमको पैदा किया है। पिता के समान अपने बड़े भाई को लिखा, "आजतक मैं जो कुछ बचाता रहा, आपके अर्पण करता रहा, अब मेरी आशा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

छोड़ दीजिये। अब जो कुछ बचेगा, वह यहीं के सार्वजनिक कामों में लगेगा।...

पूज्यभाव

हिन्दूधर्म का अध्ययन करने की इच्छा रखनेवाले हरेक हिन्दू के लिए यह एकमात्र सुलभ ग्रंथ है और अगर सब धर्मशास्त्र जलकर भस्म हो जायं तब भी इस अमर ग्रन्थ के ७०० श्लोक यह बताने के लिए काफी होंगे कि हिन्दू धर्म क्या है और उसे जीवन में किस प्रकार उतारा जाय। मैं सनातनी होने का दावा करता हूं, क्योंकि चालीस साल से इस ग्रंथ के उपदेशों को जीवन में ज्यों-का-त्यों उतारने का प्रयत्न करता आया हूं। गीता में किसी भी धर्म या धर्म-गुरु के प्रति द्वेष नहीं। मुझे यह कहते बड़ा आनन्द होता है कि मैंने गीता के प्रति जितना पूज्य भाव रक्खा है, उतने ही पूज्यभाव से मैंने बाइबिल, कुरान, जंदअवस्ता और दुनिया के दूसरे धर्मग्रंथ पढ़े हैं। इस बाचन ने गीता के प्रति मेरी श्रद्धा को मजबूत बनाया है। उससे मेरी दृष्टि और मेरा हिन्दूधर्म विशाल हुआ है।

गीता में कहीं भी छुआछूत की जगह हो, ऐसा मैं नहीं देखता। इसके खिलाफ लोहे और चुम्बक की तरह मन को खींचनेवाली वाणी मेरी बुद्धि को और इसके भी आगे मेरे हृदय को पूरी तरह छूकर मेरे मन में यह आस्था पैदा करती है कि भूतमात्र एकरूप है, वे सब ईश्वर में से निकले हैं और उसीमें विलीन हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

जानेवाले हैं। भगवती गीतामाता द्वारा बताये सनातन धर्म के अनुसार जीवन की सफलता बाहरी आचार और कर्मकाण्ड में नहीं, वरन सम्पूर्ण चित्त-शुद्धि और शरीर, मन और आत्मा सहित सारे व्यक्तित्व को परब्रह्म के साथ एकाकार कर देने में है।...

गीता का असली अर्थ

ब्रह्मज्ञान-प्राप्ति और उसके साधन, यही गीताजी के विषय हैं। दो सेनाओं के बीच युद्ध होना निमित्त है। भले ही ऐसा कहें कि कवि स्वयं लड़ाई आदि को निषिद्ध नहीं मानते थे और इसलिए उन्होंने युद्ध के प्रसंग का इस तरह उपयोग किया है। महाभारत पढ़ने के बाद तो मेरे ऊपर दूसरी ही छाप पड़ी है। व्यासजी ने इतना सुन्दर ग्रंथ लिखकर युद्ध की व्यर्थता का ही वर्णन किया है। कौरव हारे तो उससे क्या हुआ ? पांडव जीते तो भी उससे क्या हुआ ? जीतनेवाले कितने बचे ? उनका क्या हुआ ? कुन्ती माता का क्या हाल हुआ ? आज यादव-कुल कहां है ?...दूसरा अध्याय जिससे विषय शुरू होता है और अठारहवां अध्याय, जिसमें उसकी पूर्ण आहुति होती है, देखने से यही जान पड़ेगा कि गीताजी का पूरा-पूरा मतलब हिंसा नहीं, वरन अहिंसा है। बीच में देखोगे तब भी यही मालूम होगा। बिना क्रोध, राग या द्वेष के हिंसा होना संभव नहीं और गीता तो क्रोध आदि को पार करके गुणातीत की स्थिति में पहुंचा देने की कोशिश करती है। गुणातीत में क्रोध का

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नामोनिशान भी नहीं होता। अर्जुन ने कान तक खींच-खींचकर जब-जब धनुष चढ़ाया, उस समय की लाल-लाल आंखें मैं आज भी देख सकता हूं।

परन्तु अर्जुन ने कब अहिंसा के लिए युद्ध छोड़ने की हठ की थी? उसने बहुत-से युद्ध किये थे? उसे एकाएक मोह हो गया था। वह अपने सगे-संबंधियों को नहीं मारना चाहता था। अर्जुन ने दूसरों को, जिन्हें वह पापी समझता हो, न मारने की बात तो की न थी। श्रीकृष्ण अंतर्यामी हैं। वह अर्जुन का यह क्षणिक मोह समझ लेते हैं और इसलिए उससे कहते हैं, "तुम हिंसा तो कर चुके हो। अब इस प्रकार एकाएक समझदार बनने का दम्भ करके तुम अहिंसा न सीख सकोगे। इसलिए जिस काम को तुमने आरम्भ किया है उसे अब तुम्हें पूरा ही करना चाहिए।" घंटे में चालीस मील की रफ्तार से जानेवाली रेलगाड़ी में बैठा हुआ आदमी एकाएक प्रवास से विरक्त होकर यदि चलती हुई गाड़ी से ही कूद पड़े तो यही कहा जायगा कि उसने आत्म-हत्या की है। उससे उसने प्रवास या रेलगाड़ी में बैठना बेकार है, इसको नहीं सीखा है। अर्जुन का भी यही हाल था। अहिंसक कृष्ण अर्जुन को दूसरी सलाह दे ही नहीं सकते थे; लेकिन उससे यह अर्थ नहीं निकाल सकते कि गीताजी में हिंसा बताई गई है। यह अर्थ निकालना उतना ही अनुचित है जितना कि यह कहना कि शरीर को चलाने के लिए कुछ हिंसा जरूरी है और इसलिए हिंसा ही धर्म है। बारीकी से देखनेवाला इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

हिंसामय शरीर से अशरीरी होने का अर्थात् मोक्ष का ही धर्म सिखाता है।

लेकिन धृतराष्ट्र कौन थे? दुर्योधन, युधिष्ठिर और अर्जुन कौन थे? कृष्ण कौन थे? क्या ये सब इतिहास के पुरुष थे? और क्या गीताजी में उनके स्थूल व्यवहार का ही वर्णन किया गया है? अकस्मात् अर्जुन सवाल करता है और कृष्ण सारी गीता पढ़ जाते हैं! और अर्जुन यह कहकर भी कि उसका मोह नष्ट हो गया है यही गीता फिर भूल जाता है और कृष्ण से दुबारा अनुगीता कहलवाता है।

मैं तो दुर्योधनादि को आसुरी और अर्जुनादि को दैवी वृत्ति मानता हूं। धर्मक्षेत्र यह शरीर ही है। उसमें द्वंद्व चलता ही रहता है और अनुभवी ऋषि कवि उसका ज्यों-का-त्यों वर्णन करते हैं। कृष्ण तो अन्तर्यामी हैं और हमेशा शुद्ध चित्त में घड़ी की तरह टिक-टिक करते रहते हैं। यदि चित्त को शुद्धि-रूपी चाबी नहीं दी गई हो तो अन्तर्यामी के वहां रहते हुए भी उनका टिक-टिकाना तो अवश्य ही बन्द हो जाता है।

कहने का आशय यह नहीं कि इसमें स्थूल युद्ध के लिए अवकाश ही नहीं है। जिसे अहिंसा सूझी ही नहीं है, उसे यह धर्म नहीं सिखाया गया है कि कायर बनना चाहिए। जिसे डर लगता है, जो संग्रह करता है, जो विषय में रत है, वह अवश्य ही हिंसामय युद्ध करेगा; लेकिन उसका वह धर्म नहीं है। धर्म तो एक ही है। अहिंसा के मानी है मोक्ष और मोक्ष है सत्यनारायण का

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

साक्षात्कार। इसमें पीठ दिखाने को तो अवकाश ही नहीं है। इस विचित्र संसार में हिंसा तो होती ही रहेगी। उससे बचने का मार्ग गीता दिखाती है; लेकिन साथ-ही-साथ गीता यह भी कहती है कि कायर होकर भागने से हिंसा से न बच सकोगे। जो भागने का विचार करता है, वह तो मारेगा और मरेगा।...

गीता महाभारत का एक नन्हा-सा विभाग है। महाभारत ऐतिहासिक ग्रंथ माना जाता है, पर हमारे मत से महाभारत और रामायण ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि धर्मग्रंथ हैं। या उसे ऐतिहासिक ही कहना चाहें तो वह आत्मा का इतिहास है और वह हजारों वर्ष पहले क्या हुआ यह नहीं बताता, बल्कि प्रत्येक मनुष्य-देह में क्या जारी है, इसकी वह एक तस्वीर है। महाभारत और रामायण दोनों में देव और असुर के—राम और रावण के बीच नित्य चलनेवाली लड़ाई का वर्णन है। ऐसे वर्णन में गीता कृष्ण-अर्जुन के बीच का संवाद है। उस संवाद का वर्णन अंध धृतराष्ट्र से संजय करता है। गीता के मानी हैं गाई गई। इसमें 'उपनिषद्' अध्याहार है। अतः पूरा अर्थ हुआ, गाया गया उपनिषद्। अर्थात् ज्ञान-बोध। यानी गीता का अर्थ हुआ श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया हुआ बोध।

गीता कैसे पढ़ें ?

हमें यह समझकर गीता पढ़नी चाहिए कि हमारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

देह में अंतर्यामी श्रीकृष्ण भगवान आज विराजमान हैं और जब जिज्ञासु अर्जुनरूप होकर धर्म-संकट में अंतर्यामी भगवान से पूछेगा, उनकी शरण लेगा तो उस समय वह हमें शरण देने को तैयार मिलेंगे। हम ही सोये हैं, अंतर्यामी तो हमेशा जागता रहता है। वह बैठा राह देखता है कि हममें कब जिज्ञासा पैदा हो। पर हमें सवाल भी पूछना नहीं आता, सवाल पूछने की मन में भी नहीं उठती। इस कारण गीता-सरीखी पुस्तक का नित्य ध्यान धरते हैं, उसका भजन करते-करते अपने में धर्म-जिज्ञासा उत्पन्न करने की इच्छा करते हैं, सवाल पूछना सीखना चाहते हैं और जब-जब मुसीबत में पड़ते हैं तब-तब अपनी मुसीबत दूर करने के लिए हम गीता की शरण जाते हैं और उससे दिलासा पाते हैं। इसी दृष्टि से गीता पढ़नी है। वह हमारी सद्गुरु रूप है, माता रूप है और हमें विश्वास रखना चाहिए कि उसकी गोद में सिर रखकर हम सही-सलामत पार हो जायंगे। गीता के द्वारा अपनी सारी धार्मिक गुत्थियां सुलझा लेंगे। इस तरह रोज गीता का मनन करनेवालों को उसमें से रोज नये अर्थ मिलेंगे। ऐसी एक भी धर्म की उलझन नहीं है कि जिसे गीता न सुलझा सकती हो। हमारी थोड़ी श्रद्धा के कारण हमें उसका पढ़ना-समझना न आये तो वह दूसरी बात है। पर हम अपनी श्रद्धा हर दिन बढ़ाते जाने और अपनेको सावधान रखने के लिए गीता का गहराई से पठन-पाठन करते हैं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गीता कंठ करें

गीता को कंठ करने का काम मेरे अपने किये न हो सका, इसलिए यह कहना मुझे शोभा नहीं देता। फिर भी इस बात को बारंबार कहते मुझे शर्म नहीं मालूम होती, इसलिए कि उसका लाभ मैं समझता हूं। मेरी गाड़ी ज्यों-त्यों चल गई है, क्योंकि एक बार तो मैं तेरहवें अध्याय तक कंठ कर गया था और गीता का मनन तो बरसों से चल रहा है। इसलिए यह मान लिया जा सकता है कि उसकी छाया के नीचे मेरा कुछ निर्वाह हो गया; पर मैं उसे कंठ कर सका होता, अब भी उसमें अधिक गहराई में पैठ सका होता, तो हो सकता है, मैंने बहुत अधिक पाया होता; पर मेरा चाहे जो हुआ हो और हो, मेरा समय बीता हुआ माना जा सकता है या मानना चाहिए, हालांकि मुझे सहज ही इसका सुयोग मिल जाय तो गीता कंठ करने का प्रयत्न आरम्भ कर दूं।

और कंठ करने का अर्थ भी समझ लीजिये। जिस चीज को हम कंठ करें, उसके आदेश के अनुसार चलने का हमारा आग्रह होना चाहिए।

कण्ठ करने का फल

इसका फल है। हमारे पास ग्रंथ न हो, चोरी हो जाय, जल जाय, हमें याद न रहे, हमारी आंख चली जाय, हम बोलने लायक न रहें, पर समझ बनी हो—ऐसे और भी दैवयोग सोचे जा सकते हैं—उस समय अगर अपना प्रिय ग्रंथ कंठ हो तो वह हमारे लिए भारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

शांति देनेवाला हो जायगा, रास्ता दिखायगा, संकट का साथी होगा।

दुनिया का अनुभव भी यही है। हमारे पुरखा—हिन्दु, मुसलमान, पारसी—कुछ विशेष पाठ कंठ किया करते थे। आज भी बहुतेरे करते हैं। इन सबके अमूल्य अनुभव को हम फेंक न दें। इसमें कुछ अंशों में हमारी श्रद्धा की परीक्षा है।

सच्ची माता

हजारों के लिए गीता ही सच्ची माता है, क्योंकि कठिनाइयों में वह सांत्वना-रूपी पौष्टिक दूध देती है। मैंने उसे अपना आध्यात्मिक कोष कहा है, क्योंकि दुख में मैं उससे कभी निराश नहीं हुआ हूं। इसके अलावा यह एक ऐसी पुस्तक है, जिसमें साम्प्रदायिकता आदि धार्मिक अधिकारवाद का नाम भी नहीं है। यह सब मनुष्यों को प्रेरणा देती है। मैं गीता को कठिन पुस्तक नहीं मानता। इसमें संदेह नहीं कि पंडितों के हाथ जो चीज पड़ जाती है, उसीमें वे गहराई देख लेते हैं, लेकिन मेरी राय में मामूली बुद्धि के आदमी को भी गीता के सरल संदेश को समझने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। उसकी संस्कृत तो बहुत ही सरल है।...

मैं तो चाहता हूं कि गीता न सिर्फ राष्ट्रीय पाठ-शालाओं में, बल्कि हर स्कूल में पढ़ाई जाय। सब हिन्दू बालिका या बालक के लिए गीता का न जानना शर्म की बात होनी चाहिए।...

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सबसे चमकता रत्न

महाभारत रत्नों की खान है, जिनमें से गीता सिर्फ एक, लेकिन सबसे अधिक चमकता रत्न है। लिखा है कि उस लड़ाई में लाखों योद्धा इकट्ठे हुए थे और दोनों तरफ से कहने योग्य बेरहमी हुई थी। इन लाखों की सेना में से केवल सात आदमियों को जीवित रखकर तथा उन्हें बेकार की कामयाबी दिलवाकर इस महाकाव्य के अमर कवि ने साबित कर दिया है कि लड़ाई कितनी व्यर्थ की चीज है।...

श्रद्धा और बुद्धि

ज्यों-ज्यों श्रद्धा बढ़ेगी त्यों-त्यों बुद्धि बढ़ेगी। गीता तो हमें सिखाती मालूम देती है कि बुद्धि-योग ईश्वर कराता है। श्रद्धा बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। यहां श्रद्धा और बुद्धि का अर्थ समझना रहता है। यह समझ भी व्याख्या करने से नहीं आती, बल्कि सच्ची नम्रता बढ़ाने से आती है। जो यह मानता है कि वह सबकुछ जानता है, वह कुछ भी नहीं जानता। जो मानता है वह कुछ नहीं जानता, उसे यथासमय ज्ञान प्राप्त हो जाता है। भरे हुए घड़े में गंगाजल ईश्वर भी नहीं भर सकता। इसलिए हमें तो ईश्वर के सामने रोज खाली हाथ ही खड़े होना है। हमारा अपरिग्रह व्रत भी यही बताता है।

गीताजी जो धर्म सिखाती हैं, उसे समझो और उसके अनुसार अपना आचरण रखो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

: २ :

गीता-प्रवेशिका

गीता-प्रवेशिका का यरवदा-मंदिर में संग्रह किया गया था। मेरा तीसरा पुत्र रामदास उसी मंदिर (जेल) में था। उससे कई बार मिलने का अथवा उसको लिखने का मौका मुझे अधिकारी दिया करते थे। रामदास गीता पढ़ता था, परंतु सबकुछ समझ नहीं सकता था। उसकी सहायता के लिए मैंने गीता के सरल और भक्तिप्रधान श्लोकों का संग्रह करके भेजा। रामदास को यह संग्रह अच्छा लगा।

बाबा राघवदास ने उसे काकासाहब के हाथ में देखा, पढ़ा और हरिजन-सेवकों के लिए यह संग्रह उपयोगी होगा, ऐसा उनको लगा और इस दृष्टि से उसे छपवाने की सम्मति मांगी। आश्रमवासी श्री विनोबा, काकासाहब और बालकृष्ण यहीं थे। तीनों गीता के अभ्यासी और भक्त हैं। तीनों ने विचार करके और उपयोगिता बढ़ाने की दृष्टि से तीन श्लोक निकालने की और चार नये दाखिल करने की सलाह दी। इतने सुधार के साथ यह संग्रह सेवक, सेविका और अन्य गीता-भक्तों के सामने रखा जाता है। आशा और आशय यह है कि इस संग्रह को प्रवेशिका की दृष्टि से ही पढ़ा जाय और अच्छी तरह समझने के बाद पूर्ण गीता का अभ्यास किया जाय। साथ ही इतना भी ध्यान में रखा जाय कि प्रवेशिका अथवा पूर्ण गीता कंठ करने से ही

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अथवा उसका पूरा अर्थ समझने से ही कुछ आत्मलाभ हासिल नहीं होगा। गीता अनुकरण के लिए है। उसके पारिभाषिक शब्द अच्छी तरह समझने और उसका मध्यबिन्दु—अनासक्ति—हृदय में बैठने के बाद गीता समझने में कम कठिनाई आती है।

१

श्रीभगवानुवाच

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥

श्रीभगवान ने कहा—

आत्मा से मनुष्य आत्मा का उद्धार करे, उसकी अधोगति न करे। आत्मा ही आत्मा का बन्धु है और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है। (६-५)

२

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥

उसीका आत्मा बन्धु है जिसने अपने बल से मन को जीता है; जिसने आत्मा को जीता नहीं, वह अपने ही साथ शत्रु का-सा बर्ताव करता है। (६-६)

३

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

पूर्ण शान्ति से, निर्भय होकर, ब्रह्मचर्य में दृढ़ रहकर, मन को मारकर, मुझमें परायण हुआ योगी मेरा ध्यान धरता हुआ बैठे। (६-१४)

टिप्पणी—ब्रह्मचारी-व्रत का अर्थ केवल वीर्य-संग्रह ही नहीं है, साथ ही ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए आवश्यक अहिंसादि सभी व्रत हैं।

४

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥

सर्वत्र समभाव रखनेवाला योगी अपनेको सब भूतों में और सब भूतों को अपने में देखता है। (६-२९)

५

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥

जो मुझे सर्वत्र देखता है और सबको मुझमें देखता है, वह मेरी दृष्टि से ओझल नहीं होता और मैं उसकी दृष्टि से ओझल नहीं होता। (६-३०)

६

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते॥

मुझमें लीन हुआ योगी भूतमात्र में रहनेवाले मुझको भजता है, वह चाहे जिस तरह बर्तता हुआ भी मुझमें बर्तता है। (६-३१)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

टिप्पणी—'आप' जबतक है, तबतक तो परमात्मा 'पर' है। 'आप' मिट जानेपर—शून्य होनेपर ही एक परमात्मा को सर्वत्र देखता है।

७

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः॥

हे अर्जुन! जो मनुष्य अपने जैसा सबको देखता है और सुख हो या दुःख, दोनों को समान समझता है, वह योगी श्रेष्ठ गिना जाता है। (६-३२)

८

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः॥

सब योगियों में भी उसे मैं सर्वश्रेष्ठ योगी मानता हूं, जो मुझमें मन पिरोकर मुझे श्रद्धापूर्वक भजता है। (६-४७)

९

मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव॥

हे धनंजय! मुझसे उच्च दूसरा कुछ नहीं है। जैसे धागे में मनके पिरोये हुए रहते हैं, वैसे यह सब मुझमें पिरोया हुआ है। (७-७)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१०

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥

हे पार्थ ! समस्त जीवों का सनातन बीज मुझे जान । बुद्धिमान की बुद्धि मैं हूं, तेजस्वी का तेज मैं हूं । (७-१०)

११

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥

हे पार्थ ! चित्त को अन्यत्र कहीं रखे बिना जो नित्य और निरन्तर मेरा ही स्मरण करता है, वह नित्ययुक्त योगी मुझे सहज में पाता हैं । (८-१४)

१२

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

जो लोग अनन्यभाव से मेरा चिन्तन करते हुए मुझे भजते हैं, उन नित्य मुझमें ही रत रहनेवालों के योग-क्षेम का भार मैं उठाता हूं । (९-२२)

टिप्पणी—योग अर्थात् वस्तु को प्राप्त करना और क्षेम अर्थात् प्राप्त वस्तु को संभाल रखना ।

१३

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पत्र, फूल, फल या जल जो मुझे भक्तिपूर्वक अर्पण करता है वह प्रयत्नशील मनुष्य द्वारा भक्तिपूर्वक अर्पित किया हुआ मैं सेवन करता हूं। (९-२६)

टिप्पणी—तात्पर्य यह कि ईश्वरप्रीत्यर्थ जो-कुछ सेवाभाव से दिया जाता है, उसका स्वीकार उस प्राणी में रहनेवाले अन्तर्यामी रूप से भगवान ही करते हैं।

१४

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

इसलिए हे कौन्तेय! तू जो करे, जो खाय, जो हवन में होमे, जो दान में दे, जो तप करे, वह सब मुझे अर्पण करके कर। (९-२७)

१५

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्॥

सब प्राणियों में मैं समभाव से रहता हूं। मुझे कोई अप्रिय या प्रिय नहीं है। जो मुझे भक्तिपूर्वक भजते हैं वे मुझमें हैं और मैं भी उनमें हूं। (९-२९)

१६

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥

भारी दुराचारी भी यदि अनन्यभाव से मुझे भजे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

तो उसे साधु हुआ ही मानना चाहिए, क्योंकि अब उसका अच्छा संकल्प है। (९-३०)

टिप्पणी—क्योंकि अनन्य भक्ति दुराचार को शान्त कर देती है।

१७

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्ति निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति॥

वह तुरन्त धर्मात्मा हो जाता है और निरन्तर शान्ति पाता है। हे कौन्तेय! तू निश्चयपूर्वक जानना कि मेरे भक्त का कभी नाश नहीं होता। (९-३१)

१८

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवेष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥

मुझमें मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त यज्ञ कर, मुझे नमस्कार कर, इससे मुझमें परायण होकर आत्मा को मेरे साथ जोड़कर तू मुझे ही पावेगा। (९-३४)

१९

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः॥

मैं सबकी उत्पत्ति का कारण हूं और सब मुझसे ही प्रवृत्त होते हैं, यह जानकर समझदार लोग भावपूर्वक मुझे भजते हैं। (१०-८)

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: M

२०

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥

मुझमें चित्त लगानेवाले, मुझे प्राणार्पण करनेवाले एक-दूसरे को बोध कराते हुए, मेरा ही नित्य कीर्तन करते हुए, सन्तोष और आनन्द में रहते हैं। (१०-९)

२१

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥

इस प्रकार मुझमें तन्मय रहनेवालोंको और मुझे प्रेम से भजनेवालों को मैं ज्ञान देता हूं और उससे वे मुझे पाते हैं। (१०-१०)

२२

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥

उनपर दया करके उनके हृदय में स्थित मैं ज्ञान-रूपी प्रकाशमय दीपक से उनके अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करता हूं। (१०-११)

२३

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥

जो मेरे दर्शन तूने किये हैं वह दर्शन न वेद से, न तप से, न दान से, अथवा न यज्ञ से ही हो सकते हैं। (११-५३)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

२४

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन ।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रष्वेटुं च परंतप ॥

परन्तु हे अर्जुन ! हे परंतप ! मेरे सम्बन्ध में ऐसा ज्ञान, ऐसे मेरे दर्शन और मुझमें वास्तविक प्रवेश केवल अनन्य-भक्ति से ही सम्भव है। (११-५४)

२५

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥

हे पाण्डव ! जो सब कर्म मुझे समर्पण करता है, मुझमें परायण रहता है, मेरा भक्त बनता है, आसक्ति-का त्याग करता है और प्राणीमात्र में द्वेषरहित होकर रहता है, वह मुझे पाता है। (११-५५)

२६

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥

जिससे लोग उद्वेग नहीं पाते, जो लोगों से उद्वेग नहीं पाता, जो हर्ष, क्रोध, ईर्ष्या, भय और उद्वेग से मुक्त है, वह मुझे प्रिय है। (१२-१५)

२७

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ॥

समस्त नाशवान प्राणियों में अविनाशी परमेश्वर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

को समभाव से मौजूद जो जानता है वही उसका जानने वाला है। (१३-२७)

२८

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः॥

जिसके द्वारा प्राणियों की प्रवृत्ति होती है और जिसके द्वारा यह समस्त व्याप्त है उसे जो पुरुष स्वकर्म द्वारा भजता है वह मोक्ष पाता है। (१८-४६)

२९

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥

अर्जुन! ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में वास करता है और अपनी माया के बल से उन्हें चाक पर चढ़े हुए घड़े की तरह घुमाता है। (१८-६१)

३०

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥

हे भारत! तू सर्वभाव से उसकी शरण ले। उसकी कृपा से परमशान्तिमय अमरपद को पावेगा। (१८-६२)

३१

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

सब धर्मों का त्याग करके एक मेरी ही शरण ले। मैं तुझे सब पापों से मुक्त करूंगा। शोक मत कर! (१८-६६)

३२

संजय उवाच

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

संजय ने कहा—

जहां योगेश्वर कृष्ण हैं, जहां धनुर्धारी पार्थ हैं, वहां श्री है, विजय है, वैभव है और अविचल नीति है ऐसा मेरा अभिप्राय है। (१८-७८)

टिप्पणी—योगेश्वर कृष्ण से तात्पर्य है अनुभव-सिद्ध शुद्ध ज्ञान, और धनुर्धारी अर्जुन से अभिप्राय है तदनुसारिणी क्रिया। इन दोनों का संगम जहां हो वहां संजय ने जो कहा, उसके सिवा दूसरा क्या परिणाम हो सकता है?

३३

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे
सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ-
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्॥

अर्जुन बोले—

हे देव! आपकी देह में मैं देवताओं को, भिन्न-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: M

भिन्न प्रकार के सब प्राणियों के समुदायों को, कमलासन पर विराजमान ईश ब्रह्मा को, सब ऋषियों को और दिव्य सर्पों को देखता हूं। (११-१५)

३४

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप॥

आपको मैं अनेक हाथ, उदर, मुख और नेत्र-युक्त अनन्तरूपवाला देखता हूं। आपका अन्त नहीं है, मध्य नहीं है, न है आपका आदि। हे विश्वेश्वर! आपके विश्वरूप का मैं दर्शन कर रहा हूं। (११-१६)

३५

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे॥

आपको मैं जानने योग्य परम अक्षररूप, इस जगत का अन्तिम आधार, सनातन धर्म का अविनाशी रक्षक और सनातन पुरुष मानता हूं। (११-१८)

३६

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं
स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

जिसका आदि, मध्य या अन्त नहीं है, जिसकी शक्ति अनन्त है, जिसके अनन्त बाहु हैं, जिसके सूर्यचन्द्ररूपी नेत्र हैं, जिसका मुख प्रज्वलित अग्नि के समान है और जो अपने तेज से इस जगत को तपा रहा है, ऐसे आपको मैं देख रहा हूं। (११-१९)

३७

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्॥

आकाश और पृथ्वी के बीच के इस अन्तर में और समस्त दिशाओं में आप ही अकेले व्याप्त हो रहे हैं। हे महात्मन्! यह आपका अद्भुत उग्र रूप देखकर तीनों लोक थरथराते हैं। (११-२०)

३८

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप॥

आप आदिदेव हैं। आप पुराणपुरुष हैं। आप इस विश्व के परम आश्रयस्थान हैं। आप जाननेवाले हैं और जाननेयोग्य हैं। आप परमधाम हैं। हे अनन्तरूप! इस जगत में आप व्याप्त हो रहे हैं। (११-३८)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding:

३९

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥

वायु, यम, अग्नि, वरुण, चन्द्र, प्रजापति, प्रपितामह आप ही हैं। आपको हज़ारों बार नमस्कार पहुंचे। और फिर भी आपको नमस्कार पहुंचे। (११-३९)

४०

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥

हे सर्व ! आपको आगे, पीछे, सब ओर से नमस्कार है। आपका वीर्य अनन्त है, आपकी शक्ति अपार है, सब-कुछ आप ही धारण करते हैं, इसलिए आप ही सर्व हैं। (११-४०)

४१

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावः ॥

स्थावर-जंगम जगत के आप पिता हैं। आप उसके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding. f

पूज्य और श्रेष्ठ गुरु हैं। आपके समान कोई नहीं है तो आपसे अधिक तो कहां से हो सकता है ? तीनों लोक में आपके सामर्थ्य का जोड़ नहीं है। (११-४३)

४२

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥

इसलिए साष्टांग नमस्कार करके आपसे, पूज्य ईश्वर से प्रसन्न होने की प्रार्थना करता हूं। हे देव ! जिस तरह पिता पुत्र को, सखा सखा को सहन करता है, वैसे आप मेरे प्रिय होने के कारण मेरे कल्याण के लिए मुझे सहन करने योग्य हैं। (११-४४)

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. विनि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी ज़मीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. कबीर की नज़में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाबीप्रभु देवपांडे
३२. शिवाजी-बुंदर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. खादी की कहानी
३५. काबेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. ऊन की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. धन्धा किया या छुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कवियों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आवाज़ों की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाज़िर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरसराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. लोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. वीरबल की बातें
८०. धन के बीते बीस
८१. गुरुग्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. बानवान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. मन्हा जवाबीन
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि दयानंद
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक [illegible] ४०न०पै०

२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand